

3. महाराष्ट्री प्राकृत की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
4. कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक में प्राकृत के प्रयोग पर लेख लिखिए।
5. सेतुबन्ध के प्रणेता प्रवरसेन के व्यक्तित्व एवं काल की समीक्षा कीजिए।
6. लज्जावग्ग ग्रन्थ में जीवन मूल्यों की समीक्षा कीजिए।
7. राजशेखर कृत ग्रन्थों का वर्णन कीजिए।
8. वसुदेवहिण्डी के प्रथम खण्ड की कथा की विवेचना कीजिए।
9. गाहासत्तसई के वर्ण्य-विषय पर प्रकाश डालिए।

## DPL-01

June – Examination 2022

### Diploma in Prakrit Language Examination

प्रमुख प्राकृत भाषाएँ एवं  
प्राकृत साहित्य की विविध विधाएँ

Paper : DPL-01

*Time : 1½ Hours ]*

*[ Maximum Marks : 100*

*Note :-* The question paper is divided into two Sections A and B. Write answers as per the given instructions.

**निर्देश :-** यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

**Section-A**

**5×4=20**

**(Very Short Answer Type Questions)**

*Note :-* Answer any *five* questions. As per the nature of the question delimit your answer in one word, one sentence or maximum up to **30** words. Each question carries 4 marks.

खण्ड—अ

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम 30 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का है।

1. (i) अर्धमागधी नामकरण के पीछे क्या हेतु है ?
- (ii) कृदन्त एवं तद्धित में क्या अन्तर है ?
- (iii) महाराष्ट्री किसे कहते हैं ?
- (iv) पैशाची प्राकृत का क्या काल रहा है ?
- (v) मम्मट के अनुसार काव्य किसे कहते हैं ?
- (vi) पृथ्वी छन्द का लक्षण लिखिए।
- (vii) 'कंसवहो' के रचयिता कौन हैं ?
- (viii) मुक्तक काव्य के प्रतिनिधि ग्रन्थ का नाम लिखिए।
- (ix) पउमचरियं ग्रन्थ में 'पउम' का क्या अर्थ है ?
- (x) धनदेव सेठ किस ग्रन्थ का पात्र है ?

Section—B

4×20=80

(Short Answer Type Questions)

Note :- Answer any four questions. Each answer should not exceed 200 words. Each question carries 20 marks.

खण्ड—ब

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम 200 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है।

2. चरित्र काव्य की दृष्टि से पउमचरिउ की समीक्षा कीजिए।

सव्वजीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं।

तम्हा पाणवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥

अथवा

कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो।

माया मित्ताणि नासेइ, लोहो सव्वविणासणो ॥